MAHD-01

December - Examination 2025
M.A. (Previous) Examination
HINDI
(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)
Paper : MAHD-01

[*Time: **3** Hours*] [*Maximum Marks: **80***]

निर्देश :– यह प्रश्नपत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित हैं। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड–'अ' **8×2=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **सभी** प्रश्नों के उत्तर प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –
   (i) काव्य में 'बारहमासा' किसे कहते हैं?
   (ii) कबीर की दृष्टि में 'रंगमहल' का क्या तात्पर्य है?
   (iii) तन मन सेज करै अगिदाहू।
   सब कहुं चंद, भएउ मोहि राहू।।
   उक्त पंक्ति का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
   (iv) तुलसीदास कृत 'विनयपत्रिका' का संक्षिप्त में उल्लेख कीजिए।
   (v) सूरदास के प्रकृति चित्रण की कोई दो विशेषताएं लिखिए।
   (vi) कवि पद्माकर की किन्हीं दो काव्य–कृतियों के नाम बताइए।
   (vii) भूषण को राष्ट्रीय कवि क्यों कहा जाता है?
   (viii) रीतिमुक्त काव्य किसे कहते हैं?

खण्ड–'ब' **4×8=32**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

2. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
   मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।
   हस्ती पढ़िए ज्ञान की, सहज दुलीचा डारि।
   स्वप्न रूप संसार है, भूँकन दे झक मारि।।

3. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   धूत कहौ अवधूत कहौ रजपूत कहौ जुलाह कहौ कोई।
   काहू की बेटी सो बेटा न ब्याहब काहू की रीति बिगार न सोई।
   तुलसी सरनाम गुलाम है राम को जाको रुचै सो कहै कछु कोई।
   मांगि कै खैहे मसीत कै सोइबे लइबे को एक न देबो को दोई।।

4. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

बिलग जनि मानहु, ऊधों प्यारे।
वह मथुरा काजर की कोठरि जे आवहि ते कारे।
तुम कारे, सुफलकसुत कारे, कारे मधुप भँवारे।
तिनके संग अधिक छवि उपजत, कमल नैन अनियारे।
मानहु नील माट ते काढ़े लै जमुना क्यों पखारे।
ता गुन स्याम भई कालिंदी, सूरस्याम–गुन न्यारे।।

5. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

कारी कूर कोकिला! कहां को बैर काढ़ति री,
कूकि कूकि अबही करेजो किन कोरि लै।
पैंडे परे पापी ये कलापी निस द्यौस ज्यौं ही,
चातक घातक त्यौं ही तू हू कान फोरि लै।
आनंद के घन प्रान–जीवन सुजान बिना,
जानि कै अकेलो सब घेरी दल जोरि लै।
जै लौ करैं आवन विनोद वरसावन वे,
तौ लौं रे डरारे बजमारे घन घोरि लै।।

6. पृथ्वीराज रासो में कथानक रूढ़ि पर प्रकाश डालिए।
7. गीतिकाव्य परम्परा में विद्यापति का स्थान निर्धारित कीजिए।
8. जायसी ने कार्तिक मास में नागमति का वियोग वर्णन किस रूप में लिखा है? समझाइए।
9. बिहारी सतसई की लोकप्रियता के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालिए।

खण्ड–'स' **2×16=32**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **16** अंक का है।

10. 'पद्मावत' के आधार जायसी के काव्य सौन्दर्य का मूल्यांकन कीजिए।
11. मीरा की भक्ति भावना पर एक लेख लिखिए।
12. पद्माकर के काव्य में भाव और कला पक्ष का विवेचन कीजिए।
13. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए –

(क) पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता।
(ख) तुलसी की लोक समन्वय–भावना।
(ग) घनानंद काव्य में वियोग–चित्रण।
(घ) भूषण के काव्य का शिल्प पक्ष।